हिन्दुस्तान और इंग्लैण्डका आपसी लेन-देन

रजि० नं० बी४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग ११ | सम्पादक — प्यारेलाल | अंक २

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाजी देसाजी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० ९ फरवरी १९४७

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

बहनोंकी दुविधा

सवाल — जब बदमाश लोग किसी औरतपर हमला करें, तो अुसे क्या करना चाहिये? वह भाग जाय या हिंसासे अुनका सामना करे? यानी वह भाग जानेके लिअे डोंगियाँ तैयार रक्खे, या हथियारोंसे अपना बचाव करनेको तैयार रहे?

जवाब — अिस सवालका मेरा जवाब बहुत सीधा व सादा है। क्योंकि मेरे खयालमें हिंसाकी कोअी तैयारी नहीं हो सकती। अगर अूँची-से-अूँची क़िस्मकी हिम्मत बढ़ानी हो, तो हमें अहिंसाके लिअे ही सारी तैयारी करनी चाहिये। बुज़दिलीकी बनिस्बत हिंसाको हमेशा तरजीह देनेकी निगाहसे ही हिंसा बरदाश्त की जा सकती है। अिसलिअे मैं ख़तरेके वक़्त भाग निकलनेके लिअे डोंगियाँ तैयार न रक्खूँगा। अहिंसक आदमीके लिअे ख़तरेका कोअी वक़्त होता ही नहीं। अुसे तो मौतकी ख़ामोश और शानदार तैयारी करनी होती है। अिसीलिअे कहींसे कोअी मदद न मिलनेपर भी अहिंसक औरत या मर्द हँसते-हँसते मौतका सामना करेगा, क्योंकि सच्ची मदद तो भगवान्से ही मिलती है। मैं अिसके सिवा दूसरी कोअी बात सिखा नहीं सकता, और जो मैं सिखाता हूँ, अुसीपर अमल करनेके लिअे यहाँ आया हूँ। मैं नहीं जानता कि अैसा कोअी मौक़ा मुझे कभी मिलेगा या दिया जायगा। जो औरतें गुण्डोंके हमला करनेपर बग़ैर हथियारके अुनका सामना नहीं कर सकतीं, अुन्हें हथियार रखनेकी सलाह देनेकी ज़रूरत नहीं। वे तो वैसा करेंगी ही। हथियार रखने या न रखनेकी अिस हमेशाकी पूछताछमें ज़रूर ही कोअी-न-कोअी ख़ामी है। लोगोंको क़ुदरती तौरपर आज़ाद रहना सीखना होगा। अगर वे मेरी अिस ख़ास नसीहतको याद रक्खें कि अहिंसासे ही सच्चा और कारगर मुक़ाबला किया जा सकता है, तो वे अिसीके मुताबिक़ अपना व्यौहार बना लेंगे। और, बग़ैर सोचे-समझे ही क्यों न हो, मगर दुनिया यही तो करती रही है। क्योंकि दुनियाकी हिम्मत अूँचे-से-अूँचे नमूनेकी, यानी अहिंसासे पैदा हुअी हिम्मत नहीं है, अिसलिअे वह अपनेको अेटम-बमसे लैस रखनेकी हदतक पहुँची है। जो लोग अुसमें हिंसाकी व्यर्थताको नहीं देख पाते, वे क़ुदरती तौरपर अपनेको अच्छे-से-अच्छे हथियारोंसे लैस रखे बिना न रहेंगे।

जबसे मैं दक्खिनी अफ्रीकासे लौटा हूँ, तभीसे हिन्दुस्तानमें अहिंसाकी सोची-समझी तालीम बराबर दी जाती रही है, और अुसका जो नतीजा निकला है, सो हम देख चुके हैं।

सवाल — क्या किसी औरतको गुण्डोंके सामने झुकनेके बजाय ख़ुदकुशी करनेकी सलाह दी जा सकती है?

जवाब — अिस सवालका ठीक-ठीक जवाब देनेकी ज़रूरत है। नोआखालीके लिअे रवाना होनेके पहले मैंने दिल्लीमें अिसका जवाब दिया था। कोअी औरत आत्म-समर्पण करनेके बजाय यक़ीनन् ख़ुदकुशी करना ज़्यादा पसन्द करेगी। दूसरे शब्दोंमें, ज़िन्दगीकी मेरी स्कीममें आत्म-समर्पणकी कोअी जगह नहीं। लेकिन मुझसे यह पूछा गया था कि आत्महत्या या ख़ुदकुशी कैसे की जाय? मैंने तुरत जवाब दिया कि आत्महत्याके साधन सुझाना मेरा काम नहीं। और, अैसी हालतोंमें आत्महत्याकी मंज़ूरी देनेके पीछे यह विश्वास था और है कि जो आत्महत्या करनेके लिअे भी तैयार हैं, अुनमें अैसे मानसिक विरोध और आत्माकी अैसी पवित्रताके लिअे वह ज़रूरी ताक़त मौजूद है, जिसके सामने हमला करनेवाला अपने हथियार डाल देता है। मैं अिस दलीलको आगे नहीं बढ़ा सकता, क्योंकि अुसे आगे बढ़ानेकी गुंजाअिश नहीं है। मैं क़बूल करता हूँ कि अिसके लिअे जिस पक्के संबूतकी ज़रूरत है, वह मिल नहीं रहा।

सवाल — अगर अपनी जान देने और हमला करनेवालेकी जान लेनेमेंसे किसी अेकको चुननेका सवाल हो, तो आप क्या सलाह देंगे?

जवाब — जब अपनी जान देने या हमला करनेवालेकी जान लेनेमेंसे किसी अेकको पसन्द करनेका सवाल हो, तो बेशक, मैं पहली चीज़को ही पसन्द करूँगा।

पाल्ला, २७–१–'४७ **मोहनदास करमचंद गांधी**

अनाजके ख़तरेको ख़ुद टालो

पिछली ३४ जनवरीको हसनाबादके लोगोंको राहत पहुँचानेवाली कमेटीकी कृषक-समितिके नुमाअिन्दे मुराअीम मुक़ामपर गांधीजीसे मिले। अुन्होंने गांधीजीको यह बताया कि फ़िरक़ेवाराना दंगोंके हमलेसे अपने अिलाक़ेको बचानेके लिअे हसनाबादके हिन्दुओं और मुसलमानोंने मिलकर लगभग १२०० आदमियोंका अेक मज़बूत स्वयंसेवक-दल किस तरह खड़ा किया है।

गांधीजीने कहा — "कुछ दिन पहले मैंने हसनाबादके बारेमें यह सुना था कि वह दंगेके दिनोंमें हिन्दू-मुस्लिम अेकताका अेक चमकदार नमूना रहा है।"

अिसके बाद मुलाक़ातियोंने अिस अिलाक़ेमें शुरू हुअे अन्न-संकटके बारेमें गांधीजीसे बात की और अुनसे पूछा — "बंगाल सरकारका ध्यान अिस ओर खींचनेके लिअे क्या आप अपने भाषणोंमें अिस संकटका कोअी ज़िक्र न करेंगे?"

गांधीजीने जवाब दिया — "हालाँ-कि मैं यहाँकी हालतको जानता हूँ, फिर भी मैं आनेवाले अन्न-संकटके बारेमें कुछ कह नहीं रहा हूँ। मैं अिस सवालको अपने तरीक़ेसे हल करनेके बारेमें सोच रहा हूँ। मैं नहीं समझ पाता कि लोग मददके लिअे सरकारपर या दूसरी संस्थाओंपर क्यों भरोसा रखते हैं? आजकल हम सुनते हैं कि लोग विदेशोंसे अनाज मँगवानेकी कोशिश कर रहे हैं। सच बात तो यह है कि अगर लोग ख़ुद अिस मामलेमें कुछ-न-कुछ करने लगें, तो सरकारको भी अिस बारेमें ज़रूरी कार्रवाअी करनी पड़े। अिसीको मैं सच्ची लोकशाही कहूँगा, क्योंकि अुसका अमल बिलकुल नीचेसे शुरू होता है, और वहींसे वह बनती आती है। बंगालकी ज़मीन बहुत अुपजाअू है। अुसमें आप खाने लायक़ कन्द-मूल पैदा कर सकते

www.vinoba.in

हैं। लेकिन लोगोंके शौक़ और अुनकी पुरानी आदतोंको बदलने का काम मुश्किल होता है। अिन नारियलके पेड़ोंको ही देखिये। नारियलसे क़ूवत देनेवाली अच्छी ख़ुराक मिलती है। मैं ख़ुद आजकल अुसे खानेकी आदत डाल रहा हूँ। बेशक, मैं अुसका तेल निकाल लेता हूँ। और, यह तो आप जानते ही हैं कि अिस तरह बची हुअी खलीमें काफ़ी प्रोटीन होता है। फिर, आप सोचिये कि बंगालकी ज़मीनमें आलूकी ज़ातके कअी तरहके अच्छी तरह खाने लायक़ कन्द पैदा होते हैं। अिसके अलावा, आपके यहाँ मछलियोंकी भी कमी नहीं है। मछली, नारियल और ये कन्द-मूल मिलकर आसानी से चावलकी जगह ले सकते हैं।" आगे बातचीतके सिलसिलेमें गांधीजीने आमतौरपर पाअी जानेवाली लोगोंकी सुस्तीका ज़िक्र किया। अुन्होंने कहा—"आप अिस 'ह्येसिन्थ' की ही—जिसे यहाँ आप 'कचूरी पाना' कहते हैं—मिसाल लीजिये। अिसकी बेल पानीमें फैलकर जालकी तरह अुसपर छा जाती है। अगर सब लोग सरकारी मददकी राह देखे बिना ख़ुद ही स्वयंसेवक बनकर अेक हफ़्ता भी अिस काममें जुट जायँ, तो सात ही दिनोंमें वे अिन बेलोंकी बलासे छुटकारा पा जायँ, और अूपरसे हज़ारों रुपयोंकी बचत भी कर सकें।"

अिसके बाद मुलाक़ातियोंने 'तेभागा आन्दोलन'पर गांधीजीकी राय पूछी। गांधीजीने कहा—"मुझे अिस आन्दोलनकी कोअी जानकारी नहीं है। अच्छा हो कि आपमेंसे कोअी मुझे अिस बारेमें अेक नोट तैयार करके दे।" मुलाक़ातियोंने नोट भेजना क़बूल किया।

फिर गांधीजीसे पूछा गया—"क्या हम किसी अमली सियासी प्रोग्रामके ज़रिये हिन्दू-मुस्लिम अेकता क़ायम नहीं कर सकते?"

गांधीजीने जवाब दिया—"शायद कर सकते हैं। लेकिन मैं अपनी राह चल रहा हूँ। मेरा ख़याल है कि अगर लोग स्वावलम्बी बनें, तो राज-काज ख़ुद-ब-ख़ुद अुनके पीछे-पीछे चला आये।"

सवाल—"बंगालके किसानोंका यह तेभागा आन्दोलन आपसे आशीर्वादकी अुम्मीद रखता है।"

गांधीजी—"हाँ, हाँ, सभी अच्छे आन्दोलनोंको मेरे आशीर्वाद हैं।"

(अंग्रेज़ीसे)

बहन अमतुल सलाम

श्रीरामपुर डायरीके ता० २१-१-'४७वाले हिस्सेमें बहन अमतुल सलामका ज़िक्र आया है। 'हरिजनसेवक' पढ़नेवालोंके दिलमें सहज ही अुनके बारेमें कुछ ज़्यादा जाननेकी ख़ाहिश हो सकती है।

पटियाला रियासतके अेक मशहूर मुसलमान ख़ानदानमें बीबी अमतुल सलामका जन्म हुआ है। अुनकी विधवा माँ अभी ज़िन्दा हैं, और अुनके सभी भाअी अच्छी-अच्छी जगहोंपर काम कर रहे हैं। अुनके अेक भाअी—रशीदखाँ—अभी कुछ दिन पहले ही गुज़रे हैं। वे रियासत अिन्दौरके चीफ़ जस्टिस थे, और मरनेसे पहले महाराजा अिन्दौरके कॉन्फिडेन्शियल सेक्रेटरी थे। अुनकी अेक भतीजी (बहनकी लड़की) छतारीके नवाबकी बहू हैं। बहुत बरस पहले जब गांधीजी यरवड़ा जेलमें थे, तब बीबी अमतुल सलाम साबरमतीके सत्याग्रह-आश्रममें दाखिल हुअी थीं, और तबसे वे अपने विश्वासपर अटल रही हैं। अहिंसा और हिन्दू-मुस्लिम अेकतामें अुन्हें गहरी श्रद्धा है। वे अेक निष्ठावान मुसलमान हैं। हर साल रोज़े रखनेमें वे कभी चूकती नहीं। रोज़ाना क़ुरान पढ़ती हैं। और क़ुरानको तो वे हमेशा अपने साथ ही रखती हैं। अुपवासके दिनोंमें क़ुरान और गीता अुन्हें रोज़ाना पढ़कर सुनाये जाते थे। अुनके मज़हबमें ओछे ख़यालोंके लिअे कोअी जगह नहीं; बल्कि अुसमें हिन्दू, अीसाअी या दुनियाके सभी ख़ास-ख़ास मज़हबोंके लिअे गुंजाअिश है।

(बँगलासे)

गांधीजीका तरीक़ा

१३ जनवरीके दिन कलकत्तेके आशुतोष हॉलमें विद्यार्थियोंकी अेक सभामें बोलते हुअे डॉक्टर अमिय चक्रवर्तीने अपना यह विश्वास प्रकट किया कि गांधीजीकी अितिहासी कूचमें यह आध्यात्मिक श्रद्धा पूरे ज़ोरके साथ काम कर रही है कि आम आदमीमें अपने पड़ोसीके साथ भलमनसाहतका बरताव करनेका जो माद्दा मौजूद है, अुसे क़ौमी या फ़िरक़ेवाराना झगड़े कुछ देरके लिअे दबा चाहे दें, मगर मिटा तो हरगिज़ नहीं सकते। लोगोंमें अिस असली या बुनियादी विश्वासको लौटा लानेकी ग़रज़से ही गांधीजी बंगालके अन्दरूनी हिस्सेमें गये हैं। क्योंकि अिसके बग़ैर कोअी समाज अपना काम ठीकसे कर नहीं सकता। वे नोआखालीके मजलूमोंको और अुनपर ज़ुल्म करनेवाले लोगोंको यह अच्छी तरह दिखा देना चाहते हैं कि हाल ही वहाँ अिनसानने जो आफ़त और मुसीबत खड़ी कर दी थी, अुससे वहाँ ज़्यादा तादादमें रहनेवाली जमातको भी कोअी फ़ायदा नहीं पहुँचा। अिसके बरखिलाफ़, अपनी साख और अिज़्ज़तकी शकलमें अुसने जितना कुछ खोया है, अुतना ही माली नुक़सान भी अुसका हुआ है—हो सकता है। देहाती ज़िन्दगीमें आपसी मेल-जोल और मददका बड़ा हाथ है, वह अुसीपर टिकी हुअी है; अगर वहाँ आपसके विश्वासको ज़ोरका कोअी धक्का लगता है, या वहाँकी सियासी और माली ज़िन्दगीमें कोअी गड़बड़ी पैदा होती है, तो अुससे समूची देहाती ज़िन्दगी ख़तरेमें पड़ जाती है—फिर वहाँ कोअी सलामती नहीं रह जाती। और, नोआखालीमें आज यही हुआ है। वहाँ बड़ी जमातके लोग फ़िरक़ेवाराना लीडरोंके बहकावेमें आकर अिस सचाअीको भूल गये थे, लेकिन गांधीजीने अपनी बातोंसे और लगातार छान-बीनके ज़रिये वहाँ सचाअीकी जो मशाल रोशन की है, अुसके अुजेलेमें वे अब अिस चीज़को फिर महसूस करने लगे हैं।

गांधीजीके प्रोग्रामकी दूसरी ख़ासियत यह है कि वे वहाँ लोगोंको फिरसे बसानेकी कोशिश कर रहे हैं, चाहे अिसमें सरकार अुनकी मदद करे या न करे। गांधीजी चाहते हैं कि राष्ट्रकी दुःखी और अपमानित आत्मा नोआखालीकी अिस चुनौतीको मंज़ूर करे—अुसका जवाब दे।

('अंग्रेज़ी अमृतबाज़ारपत्रिका'से, १५-१-४७)

भूल-सुधार

ता० २६-१-'४७ के 'हरिजनसेवक' में "निष्ठाकी शक्ति" के नामसे लिखी गअी टिप्पणी में श्री द्रविण दीवानजीके बारेमें जो जानकारी दी गअी है, अुसमें थोड़ी ग़लती हो गअी है। श्री द्रविण जिन बच्चोंकी परवरिश कर रहे हैं, वे अुनके बड़े भाअीके बच्चे हैं। वे भी बच्चोंकी माँके मरनेके बाद श्री द्रविणकी तरह विधुर रहे हैं, लेकिन अुनके बालक तालीम वग़ैराके ख़यालसे कअी साल हुअे श्री द्रविणके पास ही रहते हैं।

साबरमती, ३१-१-'४७

(गुजरातीसे) कि० घ० म०

ख़तम हो गअीं

अुरुळीकांचनसे डॉ० अे० के० भागवत लिखते हैं कि क़ुदरती अिलाजपर लिखी और छापी गअी अुनकी सब किताबें बिक चुकी हैं, और अुनकी अेक भी कॉपी बची नहीं है। अिसलिअे अब वे किताबें नहीं भेजी जा सकेंगी।

साबरमती, २-१-'४७

(गुजरातीसे) कि० घ० म०

www.vinoba.in

श्रीरामपुर—डायरी

७-१-'४७

मंगलवार ता० ७ जनवरीको सुबह गांधीजी चण्डीपुरसे मासिमपुर जानेके लिअे रवाना हुअे। तबसे अेक गाँवमें अेक रात बितानेकी योजनाके मुताबिक़ अुनकी पैदल यात्रा शुरू हुअी। मासिमपुर चण्डीपुरसे दो मील दूर है।

अिस मौक़ेपर गांधीजीने अेक मुलाक़ातीसे कहा—"मेरी यात्राके दरमियान मुझे जो भी कुछ खानेको मिलेगा, अुसीसे मैं अपना काम चला लूँगा, और अगर दूध भी न मिला, तो अुसके वग़ैर अपना काम चला लेनेकी भी मेरी तैयारी रहेगी।"

अुन्होंने आगे कहा—"अपनी अिस 'शान्ति-यात्रा'में मौक़ा पड़नेपर मैं मुश्किल-से-मुश्किल ज़िन्दगी बितानेके लिअे भी तैयार हूँ। 'अेक दिनमें अेक गाँव' निपटानेकी अपनी योजनाके मुताबिक़ अिस सफ़रमें मैं न चिट्ठी-पत्री लिखूँगा, और न अैसा कोअी दूसरा काम करूँगा। सफ़रके दरमियान मैं मुलाक़ातें भी नहीं दूँगा। मैंने यह तय किया है कि मैं हिन्दुओं और मुसलमानोंसे मिलने, अुजड़े और बरबाद घरोंकी मुलाक़ात लेने, और अिन गाँवोंमें रहनेवाले लोगोंकी समाजी व माली हालतकी हक़ीक़तें अिकट्ठा करनेमें क़रीब-क़रीब अपना सारा वक़्त बिताअूँगा। जहाँ-जहाँ मैं जाअूँगा, वहाँ-वहाँ सब कहीं मैं लोगोंसे यह कहूँगा कि अिस दुनियामें भगवान्‌के सिवा और किसीसे मत डरो, और हिल-मिलकर शान्तिसे रहो। अिसके सिवा, मैं अुनसे आग्रह करूँगा कि वे अपने-अपने गाँवोंकी ज़िन्दगीको फिरसे संगठित करनेके लिअे तामीरी काम शुरू करें। मेरा अिरादा है कि अिस सफ़रमें मैं हिन्दुओं, मुसलमानों और औरतोंके प्रतिनिधि-मण्डलोंसे अलग-अलग मिलूँ।

"सफ़रमें अपने साथ मैं बहुत थोड़ा सामान रखूँगा। अुसमें कम्बलका मेरा छोटा बिस्तरा, रोज़मर्राके कामकी कुछ ज़रूरी चीज़ें, मेरा पेटी-चरखा, और गीता, क़ुरान व बाअिबिल सहित मेरी कुछ प्रिय पुस्तकें होंगी। चलते वक़्त मुझे सहारा देनेवाली लाठीके सिवा मुझे और किसीके साथकी ज़रूरत नहीं।"

मासिमपुर पहुँचते ही मासिमपुर-कैरवा ग्राम-सेवा-संघके मेम्बरोंके सामने तक़रीर करते हुअे गांधीजीने कहा कि लोगोंको चाहिये कि वे बाहरी दिखावेमें फँसनेके बजाय हमेशा अपने दिलको पाक और साफ़ बनानेकी भरसक कोशिश करें।

अिसके बाद अेक भाअीने अुनसे पूछा कि आर्यसमाज हरअेक हिन्दूसे आग्रहपूर्वक कहता है कि वह यज्ञोपवीत या जनेअू पहने; अिसके बारेमें हमें क्या करना चाहिये? गांधीजीने जवाब दिया—"जिसे अच्छा लगे, वह भले जनेअू पहने, मगर लोगोंको जनेअू पहनानेका आन्दोलन या प्रचार न किया जाय। अकेला जनेअू गलेमें डाल लेनेसे कुछ होना-जाना नहीं; क्योंकि अिससे हिन्दू धर्मकी ख़ामियाँ दूर न होंगी।

अपनी हिफ़ाज़तके लिअे किये गये सरकारी बन्दोबस्तका ज़िक्र करते हुअे गांधीजीने कहा—"मेरी हिफ़ाज़तके लिअे पुलिस और फ़ौजके आदमी यहाँ जगह-जगह घूमते हैं, लेकिन मुझे अैसी हिफ़ाज़त ज़रा भी पसन्द नहीं; अगरचे सरकार यह सोचती है कि अिस तरहका बन्दोबस्त करना अुनका फ़र्ज़ है। अिस बारेमें मैं किससे क्या कहूँ? सरकार जैसा अपना फ़र्ज़ समझती है, वैसा वह करती है।

"लेकिन कुछ सिक्ख भाअी भी मेरे साथ घूमते हैं। लोग पूछ सकते हैं कि 'पुलिस और फ़ौजकी बात तो समझमें आती है, मगर आप अिन लोगोंको अपने साथ लेकर क्यों घूमते हैं?' मुझे कहना चाहिये कि ये सिक्ख भाअी यहाँ मेरे बुलाये नहीं आये हैं। बंगाल सरकारकी अिजाज़त और मंज़ूरी लेकर हिन्दुओं और मुसलमानोंके बीच अेकता क़ायम करनेके अिरादेसे वे लोग यहाँ आये हैं। अिसके सिवा, अिन सिक्खोंने अपने आपको पूरी तरह निहत्था बना लिया है। अपनी कृपाणें भी वे अपने साथ नहीं रखते। अहिंसाके अुसूलके मुताबिक़ अुन्हें हिन्दुओं और मुसलमानोंकी सेवा करनी है। ये लोग दोस्तीका ख़याल लेकर आये हुअे दोस्त हैं। और अैसे दोस्तोंसे अलग रहना या अुन्हें अलग रखना मुझे अच्छा कैसे लग सकता है?"

८-१-'४७

जब सुबह गांधीजी फ़तहपुर पहुँचे, तो अुन्होंने कहा—"चारों तरफ़से मुझपर मुहब्बत बरसाअी जा रही है, और मेरे नाम आये हुअे सन्देशोंमेंसे कुछ सन्देशे बहनोंके भेजे हुअे भी हैं। वे ख़ास तौर-पर अपने हाथों तैयार की हुअी मिठाअी मुझे भेंट करना चाहती हैं। लेकिन जीभके स्वादके लिअे मुझे मिठाअीकी ज़रूरत नहीं है। मुझे तो दिलकी भूख बुझानेवाली प्रेमकी मिठाअी चाहिये। अिस गाँवने मेरे लिअे जो अिन्तज़ाम किया है, अुसके लिअे मैं यहाँके लोगोंका अेहसानमन्द हूँ। मुझे अितनी ही सहूलियत चाहिये। जिस गाँवसे मैं गुज़रूँ, अुसपर मैं बोझ नहीं बनना चाहता। मेरे खाने-पीनेकी चीज़ें मेरे साथ रहती हैं, और मेरे साथकी पूरी पार्टीका ख़र्च कुछ प्रेमी दोस्तोंने पहलेसे ही अपने सिर ले लिया है।" आगे बोलते हुअे गांधीजीने कहा—"मुसलमान दोस्त मुझसे पूछते हैं कि आज चारों तरफ़, और ख़ासकर कांग्रेस और मुस्लिम-लीगमें, अैसे क़ाबिल नेताओंके रहते हुअे, दोनों क़ौमोंमें आपसी भेदभाव क्यों बढ़ता जाता है? मैं अुनको यही जवाब देता हूँ कि नेताओंका क़ाबिल होना ही काफ़ी नहीं है, बल्कि अुन्हें लोगोंकी ज़रूरतोंकी पूरी-पूरी जानकारी भी होनी चाहिये।"

९-१-'४७

दासपाड़ामें हुअी प्रार्थना-सभाके सामने तक़रीर करते हुअे गांधीजीने कहा—"नोआखालीके मुसलमानोंको बंगाल सरकारसे—जो अुनकी अपनी सरकार है—कह देना चाहिये कि गांधीकी हिफ़ाज़तके लिअे पुलिस या फ़ौजके आदमी रखनेकी ज़रूरत नहीं है, हम ख़ुद ही अिस सफ़रमें अुसकी हिफ़ाज़त करेंगे।"

१०-१-'४७

जगतपुर गाँवमें हुअी अपनी प्रार्थना-सभामें अिकट्ठा हुअे लोगोंके सामने धर्म बदलनेके बारेमें बोलते हुअे गांधीजीने कहा—"मैं अेक अरसेसे सुनता आरहा हूँ, और ख़ासकर पिछले शुक्रवारसे मेरे कानपर आ अैसी बातें ज़ोरोंसे आ रही हैं कि अगर मुसलमान हिन्दुओंसे अपनी जान-मालकी हिफ़ाज़तके लिअे अिस्लाम धर्म स्वीकार करनेकी बात कहें, और हिन्दू अुसे मंज़ूर कर लें, तो अिसमें कोअी ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं होती। अैसी बातें कही जाती हैं या नहीं, और अुनमें सचाअी कितनी है, अिससे मुझे कोअी निस्बत नहीं। अिस बारेमें मुझे अितना ही कहना है कि अिस तरीक़ेसे अपनाया गया अिस्लाम ज़ोर-ज़बरदस्तीकी धमकीसे अपनाया गया ही कहा जायगा।

"अपनी बहुत ज़्यादा काम-काजमें उलझी-बझी ज़िन्दगीमें मैंने मुस्लिम आलिमोंकी लिखी हुअी अिस्लामकी तारीख़को, जितना मुझसे बन पड़ा, अुतने ग़ौरके साथ पढ़ा है, और अुसमें ज़बरन धर्म बदलने या अुसे निबाह लेनेकी ताअीदमें अेक भी फ़िक़रा मेरे देखनेमें नहीं आया। सच्चा धर्मान्तर दिलसे पैदा होता है, और अपने धर्मको व जिस धर्मकी सिफ़ारिश की गअी हो, अुस धर्मको पूरी तरह जाने-बूझे बिना अैसा धर्मान्तर मुमकिन नहीं।" आगे अपनी तक़रीरको ख़तम करते हुअे गांधीजीने कहा—"जबतक दोनों फ़िरक़ोंके बीच दिली समझौता नहीं होता, और धर्मान्तरके कामको बिलकुल स्वतंत्र और राज़ी-ख़ुशीसे होने देकर हिन्दू और मुसलमान अेक-दूसरेके धर्मकी अिज़्ज़त करनेके लिअे तैयार नहीं होते, तबतक मुझे सन्तोष न होगा।"

१२-१-'४७

'हिन्दुस्तान-स्टैण्डर्ड' नामके अख़बारके ख़ास संवाददाताकी रिपोर्टके मुताबिक़ गांधीजीसे मिलने आये हुअे और पहले फ़ौज में अफ़सरी किये हुअे अेक भाअीसे गांधीजीने कहा—"अखिल भारतीय

(पृष्ठ १४के दूसरे कॉलम पर)

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

९ फरवरी १९४७

हिन्दुस्तान और इंग्लैण्डका आपसी लेन-देन

ब्रिटिश खज़ानेके दोयम सेक्रेटरी सर विल्फ्रेड अेडी, बैंक ऑव् अिंग्लैण्डके डिप्टी गवर्नर मि० सी० अेफ० कॉग्वोल्ड, अिण्डिया ऑफ़िसके महकमे फाअिनान्सके आला अफ़सर मि० के० अेण्डरसन और बैंक ऑव् अिंग्लैण्डके अेक्सचेंज कण्ट्रोल महकमेके मि० पी० अेस० बीलेका अेक डेलीगेशन हिन्दुस्तानके स्टर्लिंग पावनेके बारेमें यानी अिंग्लैण्डमें पड़ी हुअी हिन्दुस्तानकी लेनी रक़मके सिलसिलेमें हिन्दुस्तानकी सरकार और रिज़र्व बैंकके नुमाअिन्दोंसे 'बातचीत' करनेके लिअे हिन्दुस्तान आया है। सर विल्फ्रेड अेडी अिस डेलीगेशनके अगुआ हैं। अिसलिअे हिन्दुस्तान और अिंग्लैण्डके आपसी लेन-देनकी अितिहासी ज़मीनपर सरसरी तौरसे ग़ौर करना दिलचस्प होगा। यह डेलीगेशन जिस स्टर्लिंग बेलेन्सकी बात करना चाहता है, वह अुन कअी रक़मोंकी आख़िरी मीज़ान है, जो अिंग्लैण्डने अुस ज़मानेसे हमारे नामे डाली हैं, जब अुसने हिन्दुस्तानपर क़ब्ज़ा किया था, और जो खासकर अिन सात सालोंमें, पिछली बड़ी लड़ाअीके दरमिअान, हिन्दुस्तानने अिंग्लैण्डको जो माल दिया, अुसके पेटे हमारे खाते जमा की गअी हैं। यह जमाशुदा रक़म ३७०० करोड़ रुपयेसे भी ज़्यादा होती है। अिसमेंसे ४३० करोड़ रुपयेकी रक़म अुस क़र्ज़ पेटे मुजरा ली गअी है, जो हमारा पुराना पब्लिक क़र्ज़ कहा जाता है। अिसके अलावा १७०० करोड़ रुपया पिछली लड़ाअीके खर्च पेटे हिन्दुस्तानके हिस्सेकी शकलमें अुसके नामे लिख दिया गया है। अिसलिअे बाक़ीके क़रीब १६०० करोड़का मामला अिस वक़्तकी चर्चाका विषय है। माना जाता है कि यह रक़म स्टर्लिंग सिक्युरिटीकी शकलमें लन्दनमें जमा है।

रुपया 'जमा' करनेके तरीक़े

जो लोग दूसरोंकी धन-दौलतसे फ़ायदा अुठाना चाहते हैं, या जो दूसरोंकी ज़मीन-जायदादका लालच रखते हैं, वे जब जैसी हालत व ज़रूरत देखते हैं, तब तरह-तरहसे वैसी तरकीबें आज़माते हैं। (१) सबसे सादा तरीक़ा धौंस जमानेका है। अिस तरीक़ेसे धनवानोंको डराकर अुन्हें अपनी धन-दौलत सौंप देनेके लिअे मजबूर किया जाता है। (२) दूसरा तरीक़ा अमानतमें खयानत करनेका यानी दूसरोंकी सौंपी हुअी रक़मको बेजा तरीक़ेसे अपने काममें खर्च कर डालनेका है। (३) अक्सर खज़ानची झूठे हिसाब लिखते हैं, यानी चालू खर्चको पूँजीके खर्चकी शकलमें लिखते हैं; और अिसके बरखिलाफ़ लम्बी मुद्दतके खर्चको चालू खर्चके खातेमें लिख डालते हैं। अिस तरह अुठाअी गअी या ग़लत तरीक़ोंपर खताअी गअी रक़म मालिककी नज़रसे बचाकर रक्खी जाती है। (४) फिर, नौकर चाहे तो अपने मालिककी क़ीमती चीज़ें पानीके मोल गिरवी भी रख सकता है। या (५) कोअी ट्रस्टी अपने अधिकारका बेजा अिस्तेमाल करके ट्रस्टकी सम्पत्तिका अपने निजी फ़ायदेके लिअे भी खर्च कर सकता है। खानगी मिल्कियतके अितिहासमें हराम्खोर लोगोंने रुपये-पैसोंके मामलेमें जो जुर्म किये हैं, अुनकी ये चन्द मिसालें हैं।

अितिहास

हिन्दुस्तानके साथ ब्रिटेनके ताल्लुक़ातकी जाँच-पड़ताल करनेसे पता चलेगा कि ब्रिटेनने अिन सब बेजा तरीक़ोंका अिस्तेमाल किया है, और अिनके अलावा भी अुसने कअी नये और अजीबोग़रीब तरीक़े ढूँढ़ निकाले हैं। क्लाअिवके ज़मानेमें रुपया निकलवानेके लिअे धौंस-धमकीका तरीक़ा काम देता था। विलियम डिग्बीके हिसाबसे प्लासी और वॉटरलूकी लड़ाअियोंके दरमियानी वक़्तमें हिन्दुस्तानके खज़ानोंसे अुठाकर क़रीब १०० करोड़ पौण्ड अिंग्लैण्डके बैंकोंमें रख दिये गये थे।

बादमें अमानतमें खयानतका ज़माना आया। अिस वक़्ततक ईस्ट अिण्डिया कम्पनीकी अपनी अेक अिज़्ज़त बन जाती है, अिसलिअे धाक-धमकीसे रुपये निकलवानेका तरीक़ा अुसे शोभा नहीं देता। चुनाँचे वह अिस तरह खयानतका तरीक़ा अख़्तियार करती है। यह काम अुसने नीचे लिखे ढंगसे किया। हिन्दुस्तानकी वसूलशुदा महसूली रक़मसे हिन्दुस्तानका माल खरीदकर वह अुसे अपने नामसे बेचनेके लिअे यूरोप भेजने लगी। 'ईस्ट अिण्डिया कम्पनीके कार-बारकी जाँचकी गवाहीकी रिपोर्ट' के मुताबिक़ सन् १७९३से १८१२के बीच अिस तरह खयानत की गअी हिन्दुस्तानकी महसूली आमदनीका आँकड़ा २६ करोड़ पौण्डतक पहुँचा था।

रानी विक्टोरियाकी हुकूमतके ज़मानेमें तो अिंग्लैण्ड अितना अिज़्ज़तदार बन गया था कि क्लाअिवकी बेहयाअीभरी लूट या ईस्ट अिण्डिया कम्पनीकी बेअीमानीका सहारा लेना अुसके दरजेको शोभा न दे सकता था। अुन्हें लूट तो मचानी थी, लेकिन साथ ही अीमानदारीका ढोंग भी रचना था। अिसके लिअे अुन्होंने शुरूसे अखीरतक ग़लत हिसाब रखनेका तरीक़ा अपनाया। अफ़ग़ानिस्तान, बर्मा, चीन, अीरान और फिर मिसर व अेबीसीनिया-जैसे दूर-दूरके मुल्कोंके साथ अिंग्लैण्डकी जो लड़ाअियाँ हुअीं, और असलमें हिन्दुस्तानके साथ जिनका कोअी वास्ता न था, अुन लड़ाअियोंकी भी बहुतसी रक़में हिन्दुस्तानके नामे डालकर हिन्दुस्तानकी आमदनीमेंसे वसूल की गअीं। यह सब रक़म क़रीब ७०० करोड़ होती है। वेल्बी कमीशनकी रिपोर्टके पन्नोंको अुलटनेपर हिन्दुस्तानके नाम यों ग़लत तरीक़ेपर अुधारी गअी रक़मोंके कअी शर्मनाक रेकार्ड देखनेको मिलेंगे।

यहूदियोंमें 'कॉरबन' नामका अेक पुराना पुरतैनी रिवाज था, जिसका मतलब बख़्शिश या भेंट होता है। अिस रिवाजके मुताबिक़ जब लड़का अपनी मिल्कियतको 'कॉरबन' कहने लगता है, तो अुसके माँ-बापको अुसका अिस्तेमाल करनेका हक़ नहीं रहता। अिसके बाद लड़का अपने माँ-बापकी परवरिश करनेके फ़र्ज़से बरी हो जाता है। अिस तरह अपने फ़र्ज़से मुँह मोड़ लेनेका यह अेक तरीक़ा है। बीसवीं सदीके जागे हुअे ज़मानेमें अपनी बुराअियोंके भण्डाफोड़से बचनेके लिअे अिंग्लैण्डको अैसी ही कोअी तरकीब खोज लेनी पड़ी थी। पहली बड़ी लड़ाअीके दिनोंमें अिंग्लैण्डको लखलूट खर्च करना पड़ा था, लेकिन अिंग्लिस्तानकी सरकार अुसका बोझ अुठानेको तैयार न थी। अिसलिअे अुसने दिल्लीमें रहनेवाले अपने मातहत आदतियोंसे—यानी हिन्दुस्तानकी सरकारसे—यह कहा कि वे अिस रक़मके बारेमें यह अैलान कर दें कि वह हिन्दुस्तानकी तरफ़से अिंग्लैण्डको भेंटमें दी गअी है। हिन्दुस्तान और अिंग्लैण्डके आपसी लेन-देनके कार-बारकी जाँच करनेके लिअे राष्ट्रीय कांग्रेसकी तरफ़से बनाअी गअी कमेटीने अिस 'भेंट'के खिलाफ़ अेतराज़ किया था। बम्बअी सरकारके दो मशहूर व साबिक़ अेडवोकेट जनरल अुस कमेटीके मेम्बर थे। सन् १९३१ में छपी अपनी रिपोर्टमें अुन्होंने यह राय ज़ाहिर की थी कि जिस क़ानूनकी रूसे हिन्दुस्तानकी सरकारका कार-बार चलता है, अुस क़ानूनको देखते हुअे अुसे कोअी हक़ नहीं कि वह हिन्दुस्तानकी आमदनीमेंसे ब्रिटेनको बख़्शिश दे। चुनाँचे अैसी बख़्शिशें ग़ैरक़ानूनी थीं। लेकिन अिंग्लैण्ड जो कुछ करना चाहता है, अुससे अुसे कौन-सा क़ानून रोक सकता है? क्या वह दुनियामें अमन क़ायम रखनेवाला, अेटम बम बनानेवाले अमेरिकाके साथ मिल-जुलकर काम करनेवाला और दुनियामें पहले दरजेकी हुकूमतवाला मुल्क नहीं है? चुनाँचे वह क़ानूनसे परे है, और वह जो करता है, सो ठीक ही करता है!

स्टर्लिंग सिक्युरिटीज़

पिछली बड़ी लड़ाअीमें अिंग्लैण्ड अेक क़दम आगे बढ़ा। अेक ज़बरदस्त मार-काट और तोड़-फोड़की लड़ाअी लड़नेके लिअे अुसे

www.vinoba.in

साधन-सामग्रीकी ज़रूरत थी। वह करोड़ोंकी अपनी जायदाद बेच चुका था, और बड़ी तेज़ीके साथ दीवालियापनकी तरफ़ बहा जा रहा था। अिसलिअे हिन्दुस्तानकी साधन-सामग्रीको लालचभरी निगाहसे देखनेका ज़बरदस्त लोभ अुसके सामने खड़ा हो गया। कुछ ही दिनोंमें अुसने अपना ताक़तवर पंजा हिन्दुस्तानकी तरफ़ बढ़ाया और करोड़ोंकी क़ीमतका गल्ला और दूसरी अिस्तेमालकी चीज़ें वह हिन्दुस्तानसे अुठा ले गया। अिसके बदले अुसने अपने यहाँ हिन्दुस्तानका खाता डाल लिया, और अुसे 'स्टर्लिंग सिक्युरिटीज़'का सुहावना नाम दे दिया। यह भी अेक तरहकी अिखलाक़ी और क़ानूनी धोखेबाज़ी ही थी। हिन्दुस्तानके रिज़र्व बैंकके क़ानूनकी ३३वीं दफ़ाकी चलनकी अमानतसे ताल्लुक़ रखनेवाली अुपधारा २में यह अिन्तज़ाम किया गया है कि "अमानतकी कुल रक़मका कम-से-कम ⅖ हिस्सा सोनेके सिक्कों, सोनेके पाटों या स्टर्लिंग सिक्युरिटीज़का होगा।" बादमें जब सन् १९३४में रिज़र्व बैंकका क़ानून पास किया गया, तो अुस क़ानूनके बनानेवालोंके खयालमें यह बात थी कि ये स्टर्लिंग सिक्युरिटीज़ क़रीब-क़रीब सोनेकी बराबरीकी होंगी, यानी अैसी होंगी जिनकी क़ीमत बाज़ारमें सोनेके बराबर आ सके। लेकिन आज जिन्हें स्टर्लिंग सिक्युरिटीज़ कहा जाता है, अुनके पीछे कोअी अमानत रक़म नहीं है, और वे सिर्फ़ अिसलिअे 'स्टर्लिंग सिक्युरिटीज़' कही जाती हैं कि अुन्हें यह नाम दे दिया गया है। अगर अिंग्लैण्डमें सोनेका या सोनेके अेक्सचेंजका पैमाना होता, और हिन्दुस्तानमें जारी किये जानेवाले करन्सी नोटोंके बदले सरकारी तिजोरीमें हुण्डियाँ रक्खी जातीं, तो स्टर्लिंग सिक्युरिटीज़की कोअी क़ीमत रहती। अिस रायके सही होनेकी ताअीद अुस क़ानूनकी ४१वीं दफ़ामें किये गये प्रबन्धसे होती है। अुसे अक़्लमन्दीके साथ समझनेसे यह मालूम होता है कि लन्दनमें अुतनी ही क़ीमतकी खरीद-शक्ति पौण्डोंमें अमानत रक्खे बिना हिन्दुस्तानमें ब्रिटिश सरकारकी तरफ़से अुस रक़मकी भरपाअी नहीं की जा सकती। यही अुसका मतलब है। अिस वजहसे आज हम किसी तरह यह नहीं कह सकते कि शाहंशाहकी सरकारने जो स्टर्लिंग सिक्युरिटीज़ अमानत रक्खी थीं, अुनमें किसी भी प्रकारकी क्रयशक्ति यानी खरीदनेकी ताक़त मौजूद थी। वैसे लफ़्ज़ी मानोंमें और क़ानूनके लिहाज़से चाहे अिसका समर्थन किया जाय, लेकिन अिसमें कोअी शक नहीं कि नैतिक दृष्टिसे तो यह खालिस धोखेबाज़ी ही है। अिससे मालूम होता है कि रिज़र्व बैंकके क़ानूनकी ३३वीं दफ़ामेंसे 'या स्टर्लिंग सिक्युरिटीज़' शब्द रद करके अुसे सुधार लेना, हिन्दुस्तानकी स्वतंत्र राष्ट्रीय सरकारके सबसे पहले करने लायक़ कामोंमेंसे अेक काम है।

हमारा चलन कैसा होना चाहिये?

हिन्दुस्तान खेती-प्रधान देश है। हमारी ज़रूरतोंके लिअे वही चलन या सिक्का मुआफ़िक़ आ सकता है, जिसकी क्रयशक्ति विनिमयके लिअे और संग्रहके लिअे घटती-बढ़ती न रहे। किसान सालमें अेक बार अपनी फ़सल काटता है। अुस वक़्त अुसे जो क्रयशक्ति मिलती है, वह बादके बारह महीनोंतक ज्यों-की-त्यों रहनी चाहिये। वैसे, किसान सटोरिया नहीं होता, अिसलिअे अपनी क्रयशक्तिके घटने-बढ़नेमें अुसे कोअी दिलचस्पी नहीं होती। सूदकी बातको अेक तरफ़ रखकर भी वाजिब तरीक़ेसे अुसे जो मिलना चाहिये, अुतना मिल जाय, तो वह पूरी तरह सन्तुष्ट हो जाता है। चुनाँचे आअिन्दा हमारे यहाँ चलनका जो अिन्तज़ाम किया जाय, अुसमें सवालके अिस पहलूपर भी ध्यान देना होगा। ज़रूरत अिस बातकी है कि किसानको विनिमयका स्थिर और विश्वसनीय साधन मिले, और अपनी क्रयशक्तिको जमा करके रखनेका भी अैसा ही कोअी ज़रिया अुसे मिल जाय। हमारे देशमें बैंकोंमें रुपये जमा करानेकी आदत दूर देहाततक नहीं पहुँची है। अिसलिअे सोनेका सहारा लेना ज़रूरी हो जाता है। क्योंकि सदियाँ बीत जानेपर भी सोनेके विनिमयकी क़ीमतमें ज़्यादा घट-बढ़ हुअी मालूम नहीं पड़ी। चुनाँचे हिन्दुस्तानमें किसान अपनी अुलटी अक़्लकी वजहसे सोना जुटाता हो, सो बात नहीं है; बल्कि दूरन्देशीसे चलनेवाले आदमीकी वह अेक आर्थिक ज़रूरत है। हमारी मुद्रा-प्रणालीमें सोनेका अितना जत्था अमानत रक्खा जाना चाहिये, जिससे किसी भी बैंडी या नाज़ुक हालतका सामना किया जा सके। जिस काग़ज़की कोअी क़ीमत नहीं है, अुसे मुनासिब सिक्युरिटीके तौरपर मंज़ूर न करना चाहिये, फिर वह किसीकी भी तरफ़से क्यों न दिया गया हो।

डॉलर पूल या पूँजी

अपने निकम्मे काग़ज़ोंको 'स्टर्लिंग सिक्युरिटीज़'का नाम देकर ३७०० करोड़का माल ले जानेके अलावा अिंग्लैण्डने हिन्दुस्तानके प्राअिवेट लोगोंकी अुस अमानतका भी बेजा अिस्तेमाल किया है, जो अुन मुल्कोंमें रक्खी गअी थी, जहाँ डॉलर या स्टर्लिंगका चलन नहीं है। अिंग्लैण्डके फ़ायदेके लिअे लन्दनमें अिकट्ठा की गअी डॉलर पूँजीमें ये तमाम अमानतें ज़बरदस्ती शामिल कर ली गअी थीं। अिस तरह हिन्दुस्तानसे डॉलरकी शकलमें कितना रुपया लूट लिया गया था, अिसका तो हमें अभीतक पता भी नहीं चल सका है।

दोहरा शोषण

रुपये-पैसेके अिस सारे कार-बारके अलावा हिन्दुस्तानका ट्रस्टी गिना जानेवाला अिंग्लैण्ड अपने फ़ायदेके लिअे ट्रस्टकी मिल्कियतका अिस्तेमाल करनेकी कोशिश करता रहा है। आअी० सी० अेस० यानी हिन्दुस्तानके सनदयाफ़्ता नौकरों और आअी० पी० अेस० यानी हिन्दुस्तानके महकमे पुलिसके नौकरोंने यहाँ, अिस देशमें, ब्रिटिश सरकारके अेजण्टोंका ही काम किया है। क्लाअिवकी हुकूमतके ज़मानेमें लुटेरे हाकिमोंको लूटका जो हिस्सा मिलता था, अुसीको ध्यानमें रखकर आज अिन लोगोंको तनख़्वाहें दी जाती हैं। ये तनख़्वाहें अितनी बड़ी-बड़ी हैं कि हमारे देशवासियोंकी आमदनीके साथ अुनका कोअी मेल नहीं बैठ सकता। लेकिन आज जब कि सच्ची राष्ट्रीय सरकार बनने जा रही है, अैसे समय ब्रिटिश सल्तनतके ये अेजण्ट घबरा अुठे हैं, और वे हिन्दुस्तानकी राष्ट्रीय सरकारकी नौकरी करनेको तैयार नहीं हैं। और तिसपर तमाशा यह है कि व्हाअिट हॉलके अुनके आक़ा अुन्हें अिस बातका मुआवज़ा दिलवाना चाहते हैं कि वे साम्राज्यवादी ब्रिटेनका सहारा खो बैठेंगे! और, यहाँ भी अपनी परम्पराके मुताबिक़ अैसा मुआवज़ा देनेकी ज़िम्मेदारी अपने सिर लेनेके बजाय वे अिस कोशिशमें लगे हैं कि मुआवज़ेकी जो रक़म वे तय कर दें, वह अिन लोगोंको हिन्दुस्तानकी तरफ़से दी जाय। पिछली बड़ी लड़ाअीमें हिन्दुस्तान शामिल नहीं होना चाहता था, फिर भी हमारे लाखों लोगोंको बहकाया गया, और अुन्हें बरतानियाके झण्डे तले लड़नेके लिअे दूर-दूर भेजा गया। अब अिन लोगोंको फ़ौजसे रुखसत दी जा रही है। सवाल यह है कि अिन्हें मुआवज़ा कौन दे — अिंग्लैण्ड या हिन्दुस्तान? लेकिन अपने शहज़ोर "ट्रस्टी"के सामने हिन्दुस्तान लाचार है। यही वजह है कि जिन फ़ौजियोंने अिंग्लिस्तानकी खिदमत की, अुन्हें अुस खिदमतके बदलेमें हिन्दुस्तानकी ज़मीनें दी जा रही हैं। हमारे दिलमें यह खयाल पैदा होता है कि घनी बस्तीवाले हिन्दुस्तानकी ज़मीनके छोटे-छोटे टुकड़ोंमेंसे बतौर मुआवज़ेके अुन्हें थोड़ी-थोड़ी ज़मीन देनेके बदले कनाडा और ऑस्ट्रेलियाके लम्बे-चौड़े प्रदेशोंका कुछ हिस्सा अुन्हें क्यों नहीं दिया जाता?

क़र्ज़ अदा करनेकी ताक़त

अिंग्लैण्ड अपना क़र्ज़ चुकानेकी ताक़त रखता है या नहीं, अिस बारेमें हम यह कह सकते हैं कि पिछले सात सालोंमें अिस ज़बरदस्त बोझको अुठानेकी ग़रीब हिन्दुस्तानकी ताक़तके साथ अपना क़र्ज़ अदा करनेकी अिंग्लिस्तानकी ताक़तका कोअी मुक़ाबला हो ही नहीं सकता। अिंग्लैण्डकी सालाना आमदनी ९०० करोड़ पौण्डसे भी ज़्यादा होती है। अिस बड़ी रक़मके मुक़ाबले हमारे क़र्ज़की रक़म तो बहुत ही कम, अुसके अेक छोटे हिस्सेके बराबर ही है। यहाँ हमें यह याद रखना चाहिये कि ३७०० करोड़का यह क़र्ज़ भी अुनके ब्रिटिश अेजण्टोंने ही खड़ा किया है, और सो भी सरकारी हुक्मसे। खुद ही मालकी क़ीमतें हिन्दुस्तानकी अुस वक़्तकी बाज़ार-

www.vinoba.in

दरोंसे बहुत ही कम कूतकर किया है। सो जो भी हो, अिसमें शक नहीं कि लड़ाअीके दिनोंमें गवर्नर जनरलको जो मनमानी हुकूमत सौंपी गअी थी, अुस हुकूमतकी रूसे यह माल लोगोंके पाससे ले लिया गया था। फिर, लड़ाअीके दरमियान सरकारने रेलवे-जैसे जिन अुत्पादक ज़रियोंका अिस्तेमाल किया, अुनकी टूट-फूटका कोअी हिसाब अिसमें लगाया नहीं गया है। जब अिस तरह लाज़िमी तौरपर माल ले लिया गया, अुस वक़्त हिन्दुस्तानके लोगोंकी बुनियादी ज़रूरतोंका भी कोअी अिन्तज़ाम नहीं किया गया था। बंगालका वह अकाल अिस बातका सबूत है, जिसमें ३० लाख लोगोंको अपनी जानें गँवानी पड़ी थीं। जब हमारे हिन्दुस्तानके जैसा ग़रीब देश लाज़िमी तौरपर मालकी कम-से-कम क़ीमत कूती जानेपर भी सात सालमें कम-से-कम ३७०० करोड़की अमानत पूँजी खड़ी कर सकता है, तो जिस अिंग्लैण्डकी सालाना आमदनी ९०० करोड़ पौण्ड है, वह अपने क़र्ज़की अदाअीके लिअे लम्बी मुद्तकी माँगका दावा किस तरह कर सकता है? जैसा कि प्रोफेसर जी० डी० अेच० कोलने कहा है – "सचमुच यह अेक अजीब-सी बात है कि अेक अमीर और आगे बढ़े हुअे देशको अपने-से ग़रीब देशसे यह कहना पड़ता है कि वह अपना क़र्ज़ कम कर दे और अुसकी अदाअीके लिअे बरसोंकी लम्बी मुद्तवाली क़िस्तें तय कर दे।"

जाँचकी ज़रूरत

अिस मुख़्तसर सर्वेसे पता चलेगा कि हिन्दुस्तानके साथके आर्थिक कार-बारमें अिंग्लैण्डको शक पैदा करनेवाले तरीक़ोंसे काम लेना पड़ा था, और जिन १६०० करोड़ स्टर्लिंग सिक्युरिटीज़के भुगतानकी बात आजकल चल रही है, वह कोअी अैसा क़र्ज़ नहीं है, जो तय हो चुका हो और कम ले-देकर भी जिसका निपटारा कर देना ज़रूरी हो। यह तो चालू हिसाबका वह क़र्ज़ है, जो हिन्दुस्तानके हमारे लोगोंकी नज़रसे दूर रक्खा गया है। चुनाँचे अिस हिसाबकी आर्थिक ज़िम्मेदारी अपने सिर लेनेसे पहले यह बहुत ज़रूरी है कि ख़ुद अिस चालू हिसाबकी ही निष्पक्ष पंचोंसे ठीक-ठीक जाँच कराअी जाय। यह चालू हिसाब या चालू खाता क्लाअिवके ज़मानेसे शुरू हुआ है, और आजतक कभी अिसकी खुली जाँच नहीं हुअी है। अिसलिअे हम यह अुम्मीद करते हैं कि हिन्दुस्तानकी स्वतंत्र राष्ट्रीय सरकारके अिंग्लैण्डसे अपना क़र्ज़ वसूल करने या सिविल सर्विस और पुलिस सर्विस–जैसी शाही नौकरियोंके सिलसिलेमें अपने सिर नअी आर्थिक ज़िम्मेदारियाँ लेनेसे पहले वह अिस चालू हिसाब या चालू खातेकी पूरी-पूरी जाँच करवानेका काम निष्पक्ष पंचोंको सौंपेगी। सन् १९३१में राष्ट्रीय महासभाने जो कमेटी बैठाअी थी, अुसने अैसे निष्पक्ष पंच मुक़र्रर करनेकी सिफ़ारिश की थी।

अिस तरह हिन्दुस्तानका जो क़र्ज़ आख़िरी तौरपर तय हो, वह पिछले बीस सालोंमें हिन्दुस्तानसे ले जाये गये सोनेमेंसे हिन्दुस्तानको कुछ या सब सोना वापस देकर, और हिन्दुस्तानमें ब्रिटिशोंकी मालिकीकी चन्द जायदादोंमेंसे कुछ हिन्दुस्तानको सौंपकर अदा किया जा सकता है। खेतीके लिअे और दूसरे अिस्तेमालके लिअे पानी मुहैया करनेकी स्कीमका खर्च ४५० करोड़ रुपया कूता गया है। अिसके लिअे ज़रूरी कल-पुरज़े और दूसरा सामान दूसरे देशोंसे काफ़ी तादादमें लाना होगा। अिंग्लैण्ड यह सारा सामान भी दे सकता है। सो जो भी हो, मगर हमें अिस बातकी खबरदारी रखनी चाहिये कि हमारे क़र्ज़की जो कोअी रक़म हमें वापस मिले, वह हिन्दुस्तानके गाँवोंके लिअे ट्रस्टकी तरह अमानत रक्खी जानी चाहिये। यह रक़म शहरोंमें बड़े-बड़े कल-कारख़ाने खोलनेमें नहीं, बल्कि हिन्दुस्तानके देहातियोंके दुःख दूर करनेके लिअे सिंचाअीका पानी मुहैया करने, कुअें खुदवाने, नहरें बनवाने और जल-मार्गोंका विकास करनेमें खर्च की जानी चाहिये। ऊपर जिस पंचकी बात सुझाअी गअी है, अुसे अिन और भुगतानकी शर्तोंमेंसे पैदा होनेवाले अैसे दूसरे मुद्दोंपर ग़ौर करनेका काम भी सौंपा जा सकता है।

(अंग्रेज़ीसे)

जे० सी० कुमारप्पा

श्रीरामपुरकी डायरी

(पृष्ठ ११ से आगे)

कांग्रेस कमेटीने दिल्लीमें जो प्रस्ताव पास किया है, अुसके ज़रिये अुसने ब्रिटिश सरकारका ता० ६ दिसम्बरका बयान मंज़ूर करके 'अपने अुसूलोंके साथ मेल रखते हुअे जिस हदतक आगे बढ़ा जा सकता है,' अुस पूरी हदतक जाकर लीगकी तरफ़ अपना दोस्ताना रुख ज़ाहिर किया है।"

अिसके अलावा गांधीजीने यह भी कहा बताया जाता है कि "कांग्रेसने दोस्तीका जो हाथ बढ़ाया है, अुसके बारेमें मुस्लिम लीग क्या रुख अख़्तियार करेगी, सो मैं कुछ कह नहीं सकता, लेकिन मुझे अितनी अुम्मीद तो रखनी ही चाहिये कि वे लोग अिसका मुनासिब जवाब देंगे।"

गांधीजी से मिलनेके लिअे आये हुअे अेक दूसरे भाअीने अुनसे पूछा–"पाकिस्तान और खानाजंगी (गृहयुद्ध)के दो रास्तोंमें से हिन्दुस्तानीकी मौजूदा हालतमें कौनसा रास्ता पसन्द करने लायक़ है?" कहा जाता है कि गांधीजीने अिसपर यह जवाब दिया — "अिस सवालको मैं दूसरी ही निगाहसे देखता हूँ। अिन दोनोंमें से अेक भी रास्ता अच्छा नहीं है। यह मानना भारी भूल है कि आपसमें लड़ने-झगड़नेसे पाकिस्तान हासिल हो जायगा।"

अिसके बाद मुलाक़ाती भाअीने पूछा — "आज़ाद हिन्दुस्तानके लिअे किस क़िस्मकी सरकार अच्छी रहेगी?" गांधीजीने जवाब दिया — "यह सवाल मेरे जवाब देने जैसा नहीं है। हिन्दुस्तानके आज़ाद होनेपर ही अिस सवालका जवाब देनेका समय आयेगा।"

१४–१–'४७

आज शामको भटियालपुरमें कुछ मुसलमान नौजवान गांधीजीसे मिले। अुन्होंने पूछा — "बिहारकी वारदातोंके बाद अब अेक अलग मुस्लिम राज क़ायम किया जाय, तो अुसमें आपको क्या अेतराज़ है?"

गांधीजीने जवाब दिया — "अलग मुस्लिम राजके क़ायम होनेमें तो मुझे कोअी अेतराज़ नहीं। दरअसल बंगालका राज आज अिसी क़िस्मका है। मगर सवाल यह है कि अैसे अलग खड़े किये हुअे मुस्लिम राजकी शकल क्या होगी? अिसके बारेमें अभीतक साफ़ लफ़्ज़ोंमें कोअी बात कही नहीं गअी है। और अगर अलग मुस्लिम-राज क़ायम करनेका यह मतलब समझा जाता हो कि वह राज परदेसी हुकूमतोंके साथ सारे हिन्दुस्तानको नुक़सान पहुँचानेवाली, दुश्मनीभरी सुलह कर सकता है, तो अिसे मंज़ूर नहीं किया जा सकता।

"मेरे खयालसे किसीको भी अिस बातके लिअे समझाया नहीं जा सकता कि वह दूसरोंको अपने ही ख़िलाफ़ लड़ाअी लड़नेकी छूट देनेपर राज़ी हो जाय।"

अुन नौजवानोंने दूसरा सवाल यह पूछा — "चूँकि पाकिस्तानका मुद्दा मंज़ूर नहीं किया जाता, अिसलिअे हिन्दुस्तानकी आज़ादीका सवाल खटाअीमें पड़ा हुआ है। क्या अिस खयालसे पाकिस्तानकी बात मंज़ूर कर लेना मुनासिब न होगा?" गांधीजीने जवाब दिया — "हिन्दुस्तानके आज़ाद होनेपर ही पाकिस्तान देनेका सवाल खड़ा हो सकता है। अिसके बदले पहले पाकिस्तान देनेकी बातपरसे परदेसी हुकूमतसे मदद माँगनेकी बात खड़ी होती है।"

गांधीजीने आगे कहा—"क्या आज़ादी और क्या पाकिस्तान, दोनोंके लिअे यह ज़रूरी है कि पहले सभी परदेसी हुकूमतोंको यहाँसे बाहर निकाल दिया जाय। जबतक हिन्दुस्तान आज़ाद नहीं होता, तबतक दूसरा कोअी सवाल ही हमारे सामने खड़ा नहीं होता।"

सभी परदेसी हुकूमतोंसे छुटकारा

"आज़ादीका जो मतलब मैं समझता हूँ, अुसमें अकेली ब्रिटिश हुकूमत ही नहीं, बल्कि सभी परदेसी हुकूमतोंसे छुटकारा पानेका सवाल है।"

www.vinoba.in

मुस्लिम नौजवानोंका पूछा हुआ आखिरी सवाल यह था — "आज जब पाकिस्तान भी नहीं है और शान्ति भी नहीं है, तब आप अिस समूचे सवालका क्या हल सुझाते हैं?" गांधीजीने जवाब दिया — "अिसी हलके लिअे तो मैं आज यहाँ घूम रहा हूँ, और नोआखालीमें रहकर अुसीकी खोजमें लगा हूँ। अितना यक़ीन रखिये कि अिसका हल मिलते ही मैं अुसे दुनियापर ज़ाहिर कर दूँगा।"

१५-१-'४७

नारायणपुर ग्राम-सेवा-संघकी सभामें बोलते हुअे गांधीजीने कहा — "छुआछूतको मिटाना आपका सबसे पहला फ़र्ज़ है। जबतक हमारे समाजसे यह ज़हर निकाला नहीं जाता, तबतक देशकी सच्ची तरक़्क़ी नहीं हो सकती। दूसरे, हिन्दू-मुस्लिम अेकता होनी चाहिये। हिन्दू, मुसलमान दोनोंमें अिस मक़सदको हासिल करनेकी बेचैनी होनी चाहिये। क्या हिन्दू, मुसलमान, दोनों, अेक ही तालाबका पानी नहीं पीते और अेक ही खेतमें पका धान नहीं खाते? अिस वक़्त आप राज-काजकी बातें भूल जाअिये, और अपना सारा ध्यान गाँवोंकी हालत सुधारनेमें, तालीमका फैलाव करनेमें, अुद्योग-धन्धोंका विकास करनेमें और दूसरे रचनात्मक या तामीरी काम करनेमें लगाअिये। अिस कामके लिअे कार्यकर्त्ताओंको अितनी तैयारी रखनी होगी कि ज़रूरत पड़नेपर वे मौतको भी गले लगा सकें।

जल्दी घर लौटो

"मुझसे यह सवाल पूछा जाता है कि घर-बार छोड़कर भागे हुअे लोग अब अपने-अपने घर लौटें या नहीं? मेरा जवाब है कि अुन्हें जल्दी-से-जल्दी अपने-अपने घर लौट जाना चाहिये। लेकिन अिसके लिअे अुन्हें सब तरहका डर छोड़ना होगा। कार्यकर्त्ताओंके फ़र्ज़ोंमें कातनेके फ़र्ज़को सबसे पहली जगह दी जानी चाहिये। अगर आप रोज़ अेक घण्टा कातें, तो आज अपने हाथ-करघोंको चालू रखनेके लिअे सूत पानेकी कोशिशमें सरकारका मुँह तकनेवाले जुलाहोंको आप बड़ी आसानीसे सूत पहुँचा सकते हैं। अिससे कपड़ेकी तंगीका सवाल कुछ आसान हो जायगा।"

मुसलमान मेज़बानके मिलनेसे ख़ुशी

नारायणपुरमें प्रार्थना-सभाके सामने की गअी अपनी तक़रीरके शुरूमें गांधीजीने कहा — "अपनी अिस पैदल यात्रामें मुझे अेक रात और भी अेक मुसलमान दोस्तके घर रहनेका मौक़ा मिला, अिससे मुझे बहुत ख़ुशी हुअी है। मैंने अपने साथियोंकी तादाद कम करनेकी कोशिश तो की, पर मैं अुसमें ज़्यादा कामयाब न हो सका। लेकिन मेरे मेज़बान मेरे साथियोंकी तादादसे घबराये नहीं, और अुनके लिअे ज़रूरी अिन्तज़ाम कर पाये, यह देखकर मुझे ज़्यादा ख़ुशी हुअी है।

"अब कुछ ही देर पहले यहाँ जो घटना घटी है, अुसका ज़िक्र आपके सामने कर दूँ। घरके बड़े-बूढ़ोंकी अिच्छा थी कि मैं ज़नान-ख़ानेकी बहनोंसे मिलूँ। अिसके लिअे मैंने कोशिश की, लेकिन मैं कामयाब न हुआ। यह सच है कि हिन्दू बहनें बड़ी तादादमें प्रार्थनामें आती हैं। वे सब ज़्यादा आगे बढ़ी हुअी हैं। लेकिन अिसीलिअे अुनका यह धर्म हो जाता है कि वे अपनी मुसलमान बहनोंसे हिल-मिलकर और अुनसे दोस्ती बढ़ाकर अुन्हें परदेकी ग़ुलामीसे छुड़ावें। अगर हिन्दू बहनें अपने अिस फ़र्ज़को अदा करनेमें चूकती हैं, तो अिसमें अुनकी अपनी ही कोअी खामी होनी चाहिये।

"आज हिन्दुस्तान आज़ादीके लिअे तड़प रहा है। लेकिन अगर अुसकी आधी आबादीको लकवा मार जाय, तो हिन्दुस्तानकी जनताको मिलनेवाली आज़ादीका नमूना सम्पूर्ण न हो। अिसलिअे मैं पूरी-पूरी नरमीके साथ यहाँ आये हुअे घरके बड़े-बूढ़ोंसे यह विनती करता हूँ कि वे परदेके रिवाजका औरतोंपर जो असर होता है, अुसकी पूरी-पूरी जाँच करें, और कम-से-कम वक़्तमें अुसे मिटा दें। मैं यह बात किसी ख़ास वजहसे ही कह रहा हूँ। अपनी अिस यात्रामें परदेके अिस रिवाजका जो रूप मैंने देखा, वह हज़रत पैग़म्बर साहबके अुपदेशसे बिलकुल अुलटा है।"

१६-१-'४७

शामकी प्रार्थना-सभामें गांधीजीने कहा — "कल नारायणपुरमें कुछ मुसलमान दोस्तोंकी तरफ़से मुझे चन्द सवाल पूछे गये थे। अुनमेंसे अेक सवाल यह है — 'अगर आप हिन्दुओं और मुसलमानोंमें अेका पैदा कराना चाहते हैं, तो आपने आसाम और पंजाबके सिक्खोंको ब्रिटिश सरकार द्वारा तय किये सूबोंके समूहोंसे अलग रहनेकी सलाह क्यों दी? और, आपके अुन्हें अैसी सलाह देनेके बाद मुस्लिम लीग विधान-सभामें शामिल होनेके लिअे कैसे तैयार हो?' मेरे अपने मक़सदमें 'अगर-मगर'की कोअी गुंजाअिश नहीं। अपनी जवानीके दिनोंसे लेकर आजतक — यानी लगातार ६० बरसोंसे — हिन्दू-मुस्लिम अेकता मेरी ज़िन्दगीका अेक मक़सद रही है। अपने अिस मक़सदमें और आसामके लोगोंको, सिक्खोंको, सरहदी सूबेवालोंको और अुन्हींकी तरह माननेवाले और और लोगोंको सूबोंके गिरोहोंसे या विधान बनानेवाली सभासे अलग रहनेकी मेरी सलाहमें मुझे कोअी विरोध नहीं दिखाअी देता। कैबिनेट मिशनका दस्तावेज़ अेक अैसी योजना पेश करता है, जिसपर राज़ी-ख़ुशीसे अमल किया जाना चाहिये। अिसलिअे किसी भी पार्टीको विधान-सभामें शरीक होनेके लिअे मजबूर नहीं किया जा सकता। विधान-सभाके पास अपने ठहरावों या अिरादोंपर अमल करानेके लिअे आम जनताकी रायके सिवा दूसरी कोअी ताक़त नहीं है।

कांग्रेसका रुख़

"अिसलिअे मैंने अैसी कोअी सलाह नहीं दी, जिससे मुस्लिम लीगके लिअे विधान-सभामें जाना नामुमकिन हो जाय। अभी हालमें कांग्रेसकी महासमितिने जो ठहराव पास किया है, अुसे पढ़कर मैं यह समझा हूँ कि कांग्रेसने कैबिनेट मिशनके प्रस्तावको पूरी तरह मान लिया है।

"मुझे अुम्मीद है कि मुस्लिम लीग विधान-सभामें शरीक होगी, और वहाँ जाकर वह लोगोंको दलीलोंसे अपनी बात समझाकर, अपने रुखको वाजिब साबित करनेका मौक़ा हाथसे जाने न देगी। हिन्दुस्तानकी अेक पार्टीके पास ताक़त थी, अुसने यह विधान-सभा बनाअी है। लेकिन अगर सब पार्टियोंको अुसमें अपनी राज़ी-ख़ुशीसे शामिल होने या न होनेकी आज़ादी न हो, तो विधान-सभा अेक मज़ाक या पत्तोंके महल-जैसी फूँक मारते ही अुड़ जानेवाली संस्था बन जाती है। जब विधान-सभाको हिन्दुस्तानके आमलोगोंके मतकी पूरी ताक़त मिलेगी, तभी वह अेक मज़बूत अिमारत बन सकेगी। अगर विधान-सभा और सब तरहसे अच्छी हो, तो कुछ सूबों या कुछ गिरोहोंके अुससे अलग रहनेपर भी अुसके काममें किसी तरहकी रुकावट न आवेगी, और न आनी चाहिये।

"मैं यह पूछता हूँ कि आखिर 'आसामको अुसकी मरज़ीके खिलाफ़ बंगालमें और सरहदी सूबेको या सिक्खोंको अुनकी मरज़ीके खिलाफ़ पंजाब और सिन्धमें क्यों मिलाया जाय?' कांग्रेस या लीगको अपने-अपने सूबोंकी हालतके मुताबिक़ अपनी नीति दरअसल अितनी लुभावनी बनानी चाहिये कि वह अुन सूबों या समूहोंकी बुद्धिको भी अपील करे, जो आज अुसमें अपना नुक़सान देखकर अुसकी मुख़ालिफ़त करते हैं।

दोनों फ़िरक़ोंका दोस्त

"दूसरा सवाल मुझसे यह पूछा गया था — 'आप दोनों फ़िरक़ोंके दोस्त होनेका दावा करते हैं। फिर भी, पिछले दो महीनोंसे नोआखालीमें रहकर आप अपने फ़िरक़ेके लोगोंको हिम्मत दिलाकर अुन्हें फिर ख़ुद अपने पैरों खड़ा होने लायक़ बनानेकी कोशिश कर रहे हैं। लेकिन बिहारके जिन मुसलमानोंने अपना सब-कुछ गँवा दिया है, अुनका क्या? अुनके लिअे आप क्या करते हैं?' अिस सवालके पूछनेवालोंसे मैं कहना चाहूँगा कि अुनके अिस सवालमें हक़ीक़तोंको

www.vinoba.in

भुला दिया गया है। यह सच नहीं है कि मैं अपने फ़िरक़ेके लोगोंको हिम्मत दिलाकर अुन्हें अुनके पैरों खड़ा होने लायक़ बनानेके काममें लगा हूँ। सिवा अिसके कि मैं अपनेको सब फ़िरक़ोंका मानता हूँ, मेरा अपना कोअी फ़िरक़ा नहीं। आजतकका मेरा काम अिस बातका सबूत है। यह क़बूल करनेमें मुझे ज़रा भी हिचकिचाहट नहीं कि मैं नोआखालीके हिन्दुओंको हिम्मत बँधानेकी कोशिश कर रहा हूँ। लेकिन अिसमें भी मुसलमानोंको नुक़सान पहुँचाकर मैं न तो कुछ करता हूँ, न करना चाहता हूँ। अगर मेरे घरका कोअी अेक आदमी बीमार पड़े, और मैं अुसकी सेवा करूँ, और अुसकी सार-सँभालका ज़्यादा ध्यान रखूँ, तो यक़ीनन् अिसका यह मतलब नहीं कि मैं घरके दूसरे लोगोंकी परवाह नहीं करता। मेरे मुस्लिम दोस्त बार-बार मुझे यह आग्रहभरी सलाह देते हैं कि मेहरबान, आज तो आपको बिहारमें जाकर काम करना चाहिये, क्योंकि तादादके खयालसे बिहारके मुसलमानोंको नोआखालीके हिन्दुओंसे ज़्यादा सहना पड़ा है। मुझे दुःख है कि अभीतक मैं अपने मुसलमान टीकाकारोंको यह समझानेमें नाकाम रहा हूँ कि यहाँ बैठे-बैठे भी मैंने बिहारके हिन्दुओंको वहाँके मुसलमानोंका हमदर्द बनानेका काफ़ी काम किया है। अगर मैं अपनी समझके ख़िलाफ़ अपने टीकाकार दोस्तोंकी टीकासे घबराकर बिहार चला जाअूँ, तो मुमकिन है कि मुसलमानोंके कामको फ़ायदा पहुँचानेके बजाय मैं अुसे नुक़सान पहुँचा बैठूँ।

"अिस तरह, मिसालके तौरपर कहूँ, तो हो सकता है कि बिहार जाकर भी मुझे बिहारके हिन्दुओं और वहाँकी सरकारपर लगाये गये अिलज़ामोंकी ताअीद करनेवाली कोअी चीज़ न मिले। चुनाँचे अैसा कोअी अेलान कर सकनेके लिअे मैंने अिससे भी बेहतर रास्ता पकड़ा है। मैंने बिहार-सरकारको सलाह दी है, और अुसने मेरी वह सलाह मान ली है, कि अुसे बंगाल-सरकारके साथ मिलकर या अकेले ही दंगेकी जाँचके लिअे अेक निष्पक्ष कमीशन बैठाना चाहिये।"

१७ और १८-१-'४७

"आज प्रार्थना शुरू होनेके थोड़ी देर पहले बादलपुर जाते हुअे मैं जिन मुसलमान दोस्तके घर ठहरा था, वे मेरे पास आकर बोले— 'आपके और जनाब जिन्नाके बीच समझौता हो जाय, तो देशमें शान्ति क़ायम हो सकती है।' मैंने जवाबमें अुनसे कहा कि मैं अैसे किसी भरममें नहीं रहता। और, मैं नहीं मानता कि मुझमें कोअी खास दैवी या ख़ुदाअी ताक़त है। आप सब जानते हैं कि जिन्ना साहबसे मैं कअी बार मिला हूँ। हमारी मुलाक़ातें हमेशा दोस्ताना ढंगसे हुअी हैं; फिर भी आप सब जानते हैं कि अुनका कोअी नतीजा नहीं निकला।"

गांधीजीने आगे कहा — "सच तो यह है कि किसी नेताको अुसके अनुयायी ही नेता बनाते हैं। जनताके दिलमें जो-जो ख़ाहिशें दबी पड़ी रहती हैं, अुनकी परछाअीं नेताकी ज़िन्दगीमें ज़्यादा साफ़ दिखाअी देती है। यह बात अकेले हिन्दुस्तानके लिअे ही नहीं, बल्कि सारी दुनियाके लिअे सच है। अिसलिअे मैं हिन्दुओं और मुसलमानोंको यह समझाता हूँ कि अपनी रोज़मर्राकी ज़िन्दगीके सवालोंको हल करनेके लिअे आप मुस्लिम लीग, कांग्रेस या हिन्दू महासभाकी तरफ़ न ताकिये। अिस तरहके सवालोंके हलके लिअे आपको ख़ुद अपने अूपर ही भरोसा रखना चाहिये। और, जब आप यह रास्ता अख़्तियार करेंगे, तो पड़ोसीके साथ भाअीचारे और दोस्तीसे रहनेकी आपकी ख़ाहिशका असर आपके नेताओंपर भी पड़ेगा। जो सवाल साफ़ तौरसे सियासी दुनियाके हैं, अुन्हें सियासी संस्थायें भले हल करें, लेकिन आप सबकी निजी ज़रूरतोंका अिन संस्थाओंको कितना ख़याल हो सकता है? आपके किसी पड़ोसीके बीमार पड़नेपर आपको क्या करना चाहिये, यह पूछनेके लिअे क्या आप कांग्रेस या लीगके पास दौड़े जायँगे? अैसी कोअी बात सोची भी नहीं जा सकती।

"कल शामको औरतोंको दी गअी जिन्ना साहबकी सलाह मैंने आपको पढ़कर सुनाअी थी। अुन्होंने कहा है कि औरतोंको जल्दी-से-जल्दी लिखना-पढ़ना सिखाकर अुन्हें अनपढ़पनके अँधेरेसे बाहर निकालो। लेकिन मेरे ख़यालमें यह काफ़ी नहीं। क्या पढ़े-लिखे आदमियोंके पढ़ना और लिखना जान लेनेसे अुनकी हालत ज़्यादा अच्छी हो जाती है? क्या वे सियासी दुनिया में आज आने और कल जानेवाली फ़ैशनोंके शिकार नहीं बनते? हिटलरके पैरों तले अितने लम्बे अरसेतक कुचले गये जर्मनीकी मिसालसे मेरे कहनेका मतलब आप समझ जायँगे। सब जानते हैं कि आज जर्मनी की हालत बहुत बुरी है। अिनसानकी अिनसानियत अुसके लिख-पढ़ लेनेकी क़ाबिलीयतमें या अुसकी पंडिताअी में नहीं, बल्कि ज़िन्दगीकी सच्ची तालीममें है। अगर आपको दुनिया की सब बातोंका ज्ञान हो, और ख़ुद अपने पड़ोसीके साथ भाअीचारे से रहना न आता हो, तो आपके पढ़ने-लिखनेसे या आपकी पंडिताअी से फ़ायदा ही क्या?"

गांधीजीने आगे कहा — "अगर कुछ लोगोंने अपने पड़ोसियोंके साथके बरतावमें भारी भूलें की हों, तो अुन्हें पछताकर ख़ुदासे माफ़ी माँगनी चाहिये। भगवान् गुनाह माफ़ कर दे और दुनिया न करे, तो भगवान्पर भरोसा रखनेवाला आदमी दुनियाकी परवाह नहीं करता। दुनियाकी दी हुअी सज़ाको हिम्मतके साथ सहन करनेसे अिनसान अूँचा अुठता और बनता है। पैग़म्बर साहबके सख़ुनोंकी अेक किताबमें मैंने पढ़ा था कि अिनसानको चाहिये कि जबतक वह अपनी ग़लतीको सुधार न ले, कभी चैनसे न बैठे। जो अपनी ग़लतीको नहीं सुधारता, अुसे क़यामतके दिन ख़ुदाके सामने खड़ा किया जाता है, और अुसपर ख़ुदा मेहरबान नहीं होता।

"आप सबका लिखना-पढ़ना वग़ैरा सीख लेना ही काफ़ी नहीं। आप सबको अपने-अपने पड़ोसीके साथ भाअीचारेसे रहनेकी कला भी सीखनी होगी। यहाँ औरतोंकी तादाद आपकी पूरी आबादीकी आधी होगी। आप अुन सबको अज्ञान और अन्धविश्वासकी ग़ुलामी-से छुड़ाअिये। अिनसानोंको मेल-जोलके साथ जीकर सबकी भलाअीके लिअे काम करना चाहिये। अिन सब बातोंके लिअे यह ज़रूरी नहीं कि आप राज-काजी दलोंकी रहनुमाअीकी राह देखते बैठें। अिसके लिअे तो आपको अपनी आत्मापर या भगवान्पर ही भरोसा रखना चाहिये।

"निजी तौरपर मैं अिसी अेक काममें भिड़ा हुआ हूँ। अगर मेरा यह काम पूरा न हुआ, या अधूरा रह गया, तो मैं यहाँसे ज़िन्दा लौटना नहीं चाहता। अगर मैं अपने मुसलमान भाअियोंके दिलोंमें जड़ जमाकर बैठे हुअे अविश्वासको मिटानेमें कामयाब हुआ, और मैं यह साबित कर सका कि अभी-अभी रोज़मर्राकी ज़िन्दगीकी जिन बातोंका ज़िक्र मैं कर चुका हूँ, वे बातें ही कुल मिलाकर सबसे ज़्यादा महत्त्वकी हैं, तो अुसका असर देशके अिस छोटे-से हिस्से-पर ही नहीं, बल्कि सारे हिन्दुस्तानपर होगा, और शायद दुनियाकी भावी शान्तिपर भी अुसका गहरा असर पड़ेगा।

(अंग्रेज़ीसे)

विषय-सूची

		पृष्ठ
बहनोंकी दुविधा	... गांधीजी	९
अनाजके ख़तरेको ख़ुद टालो		९
गांधीजीका तरीक़ा		१०
श्रीरामपुर-डायरी		११
हिन्दुस्तान और अिंग्लैण्डका आपसी लेन-देन	... जे० सी० कुमारप्पा	१२
टिप्पणियाँ		
बहन अमतुस्सलाम		१०
भूल-सुधार	... कि० घ० म०	१०
ख़तम हो गअी	... कि० घ० म०	१०

www.vinoba.in